DOI: 10.51220/hjssh.v5i1.16

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 5 pp.131 -141, December, 2010, ISSN. 0975 - 9891

रामायण की कथावस्तु के सापेक्ष, एच.डी. सांकलिया की पुस्तक में रामकथा सम्बन्धी उनके कथनों तथा अभिमतों का परीक्षण:

जयजीत बड़थ्वाल

इतिहास विभाग

हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, परिसर पौड़ी।

Email-jaijeet.barthwal@gmail.com

Received: 7-12-2010 **Revised: 16-12-2010** **Accepted: 31-12-2010**

ABSTRACT

प्रख्यात पुरातत्वविद् एच. डी. सांकलिया ने अपनी पुस्तक 'RAMAYANA MYTH OR REALITY?' में 'वाल्मीकि रामायण' का आलोचनात्मक परीक्षण प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोधपरक आलेख में एच. डी. सांकलिया की उपरोक्त पुस्तक में उनके कतिपय कथनों तथा अभिमतो को 'वाल्मीकि रामायण' के सापेक्ष रख, परीक्षण किया गया है।

Key words:Crtical analysis of 'RAMAYAN MYTH OR REALITY?' on some aspectcs.

पुरातत्वविद् एच. डी. सांकलिया ने रामायण विषय पर अपने दो व्याखानों को एक पुस्तक का रूप देते हुए 'RAMAYANA MYTH OR REALITY?' के नाम से प्रकाशित किया है। उपरोक्त व्याख्यानों में पहले का शीर्षक Is Ramayan a Myth or Reality? तथा दूसरे का Ramayana- A Reality दिया गया है। इन व्याख्यानों में वाल्मीकि रामायण की मुख्य मुख्य बातों का अपने दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है तथा अन्त में पुरातात्विक दृष्टिकोण से साररूप कुछ बिन्दु दिये गये हैं।

सांकलिया महोदय के उपरोक्त व्याख्यानों, जिनके लिखित स्वरूप को निबन्ध भी कहा जा सकता है, में तथ्यों के सुविधानुसार चयन तथा उनकी मनोवाछिंत व्याख्या के कारण सांकलिया के निबन्धों में अनेक स्थलों पर ऐसे विरोधाभास उत्पन्न हो गए हैं, जो कि किसी भी परिस्थिति मे युक्तियुक्त अथवा स्वीकार्य नहीं कहे जा सकते। पुरातात्विक दृष्टिकोण को आधार बनाकर लिये गये अपने निष्कर्षों को सांकलिया एक भी पुरातात्विक प्रमाण से पुष्ट नहीं करते। रामायण के कथाप्रसगों से सम्बन्धित सांकलिया के कतिपय कथन रामायण की कथावस्तु से बिल्कुल मेल नहीं खाते। सांकलिया द्वारा रामायण के मुद्रिका प्रसंग की चर्चा के वक्त The Ring Episode In Ramayana शीर्षक के अन्तर्गत किया गया, रामायण का संक्षिप्तीकरण भी दोषपूर्ण है। जिसका अवलोकन हम The Ring Episode; नामक शीर्षक के अन्तर्गत करेगें।

अपनी पुस्तक में लेखक ने महाभारत के रामोपाख्यान की भी चर्चा की है। रामोपाख्यान महाभारत के आरण्यक पर्व के अन्तर्गत समाहित संक्षिप्त रामकथा है। यह मार्कण्डेय तथा युधिष्ठिर के मध्य संवाद के रूप

©SHARAD

में हैं। द्रौपदी को वन में अकेली पाकर सौवीर नरेश जयद्रथ उसको हर ले जाता है। तभी पांडव भी आखेट से वापस लौटते हैं, जयद्रथ का पीछा कर उसे पराजित कर द्रौपदी को छुड़ाते हैं। किन्तु पूरे घटनाक्रम से युधिष्ठिर बहुत व्यथित होते हैं।

वन में नित नयी नयी कठिनाईयों के परिप्रेक्ष्य में मार्कण्डेय के पास बैठकर वह अपने भाग्य को कोसते हैं। इस पर मार्कण्डेय उनको सांत्वना देते हुए उनसे भी दुष्कर चुनौतियों का सामना करने वाले के रूप में राम के नाम का उल्लेख करते हैं। युधिष्ठिर की जिज्ञासा राम के विषय में जानने को बलवती हो जाती है तथा वो मार्कण्डेय से राम के विषय में और अधिक जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। युधिष्ठिर तथा मार्कण्डेय के मध्य संवाद के रूप मे यह रामकथा आगे बढ़ती चलती है। इसे ही महाभारत के रामोपाख्यान के नाम से अभिहित किया जाता है। संक्षिप्त होते हुए भी यह अत्यन्त रोचक है तथा रामायण से एक भिन्न कलेवर लिये दिखाई पड़ती है। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की सामग्री, जिनमें सीता को त्यागने आदि के प्रसंग है, रामोपाख्यान में नहीं हैं। यह सीता राम के मिलन, पुष्पक विमान से वापसी, राम के राज्याभिषेक, वानरवीरों के राम के द्वारा पुरस्कृत किये जाने तथा राम के द्वारा दस अश्वमेध यज्ञ किये जाने की सूचना के साथ एक सुखांत कथा के रूप में सम्पूर्ण होती है। अपनी पुस्तक मे सांकलिया ने एक स्थल पर रामोपाख्यान तथा रामायण के मध्य कतिपय तुलनाओं को भी रेखांकित किया है। सांकलिया द्वारा रामोपाख्यान की इस चर्चा के अवसर पर आये कतिपय कथन तथा अभिमत भी हमारी चर्चा का विषय हैं, जिन्हें Sankalia on Ramopakhyan नामक शीर्षक के अन्तर्गत विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। लंका के विस्तार, तथा नल द्वारा निर्मित सेतु की लम्बाई एवं चौड़ाई के विषय में सांकलिया के कथनों का परीक्षण भी यथा स्थान किया गया है।

1-THE RING EPISODE

A: The Ring Episode In Ramayana नामक शीर्षक के अन्तर्गत सांकलिया ने रामनामांकित उस अगूंठी की चर्चा की है जो कि राम द्वारा हनुमान को पहचान चिन्ह के रूप मे सीता को देने के लिये प्रदान की गई थी। इस शीर्षक के अन्तर्गत लेखक ने भारत मे सिग्नेट रिंग्स की शुरूआत के विषय में भी बताया हैं। इस चर्चा के प्रारम्भिक भाग में लेखक ने संक्षेप मे रामायण के रिंग एपिसोड की कहानी बताई है, उनके द्वारा कही गयी संक्षिप्त कहानी, सांकलिया के शब्दों में इस प्रकार है:-

"The story is briefly this: When Hanuman is being given detailed instructions to search for Sita in the Vindhyas and south, he asks Ram to give him something on the production of which Sita will recognize that he (Hanuman) had come from Ram himself.

Some very personal object was necessary and Ram gives him his finger- ring bearing the name 'Rama' and as Hanuman had anticipated Sita asks hanuman to prove his bona fides and he immediately produces the finger-ring. With this passport Hanuman's way becomes easy. ('Ramayan myth or reality?' P- 54)

वाल्मीकि रामायण के सांकलिया द्वारा किये गये उपरोक्त संक्षिप्तीकरण में यह बताया गया है कि हनुमान द्वारा यह पूर्वानुमान किया गया कि सीता द्वारा उनसे अपना प्रमाण देने के लिये कहा जायेगा, यह

सोचकर हनुमान ने सीता की खोज को जाते समय राम से सीता को दिखाने के लिये कोई प्रतीक चिन्ह देने का अनुरोध किया। तब राम ने अपनी अंगूठी उतारकर हनुमान को दी।

वाल्मीकि रामायण की कसौटी पर रखने पर सांकलिया द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त संक्षिप्तीकरण, दोषपूर्ण सिद्ध होता है जो कि रामायण की कथावस्तु से मेल नहीं खाता। सांकलिया द्वारा प्रस्तुत संक्षिप्तीकरण के ऐसे कथनों को जिन पर कि हमारा यह कहना है कि वे रामायण के कथानक के अनुरूप नहीं हैं, अध्ययन तथा परीक्षण की सुविधा के नजरिये से हम निम्न बिन्दुओं के रूप मे रख रहे हैं:

अ.कथन–हनुमान ने राम से सीता को दिखाने या देने के लिये किसी पहचान चिन्ह की मांग की।

ब.कथन–सीता ने हनुमान से राम दूत होने का कोई प्रमाण प्रस्तुत करने के लिये कहा।

स.कथन–हनुमान ने यह पूर्वानुमान कर लिया था कि सीता उनसे उनकी पहचान का प्रमाण देने के लिये कहेगी।

हमारा कहना है कि सांकलिया द्वारा रामायण के संक्षिप्तीकरण मे किये गये उपरोक्त तीनों ही कथन रामायण की कथावस्तु के दृष्टिकोण से दोषपूर्ण हैं तथा रामायण की कथावस्तु के सापेक्ष सही नहीं ठहरते।

परीक्षण की दृष्टि से सांकलिया के कथन, अ का विश्लेषण 'A' के अन्तर्गत तथा कथन ब का विश्लेषण 'B' के अन्तर्गत किया जा रहा है। बिन्दु स का निवारण अन्य दो कथनों के विश्लेषण के साथ स्वयमेव हो जाता है।

A.कथन अ का परीक्षण

हमारा कहना है कि वाल्मीकि रामायण की कथा अनुसार हनुमान द्वारा राम से सीता को दिखाने के लिये किसी पहचान चिन्ह की मांग नहीं की जाती, ना ही रामायण मे हनुमान के ऐसे किसी पूर्वानुमान का संकेत हैं जिसमें हनुमान ने पहले ही यह सोचा हो कि सीता उनसे कोई पहचान चिन्ह की मांग कर सकती है। रामायण की कथानुसार राम स्वत:स्फूर्त प्रेरणा से हनुमान को अपने नाम से अंकित अंगूठी प्रदान करते हैं न कि हनुमान के मांगने पर। किष्किन्धाकाण्ड के अन्तर्गत हनुमान को अंगूठी देने का प्रसंग एक अलग सर्ग के रूप में विद्यमान है जिसके प्रथम तेरह श्लोकों को अनुवाद सहित यहाँ दिया जा रहा है जिससे कि इस बात को समझने में आसानी होगी। इसमें 13वां श्लोक हनुमान को सम्बोधित राम का कथन है।श्लोक 9 तथा 10 में राम का आत्म चिन्तन तथा 3 से 7 सुग्रीव के हनुमान को सम्बोधित कथन हैं।

विशेषेण तु सुग्रीवो हनूमत्यर्थमुक्तवान।
स हि तस्मिन् हरिश्रेष्ठे निश्चितार्थोशर्थ्यसाधाने।। 5.44.1.

सुग्रीव ने हनुमान के समक्ष सीता के अन्वेषण के प्रयोजन को विशेष रूप से रखा क्योंकि उन्हें यह विश्वास था कि वानरश्रेष्ठ हनुमान ही इस कार्य को सिद्ध कर सकेंगें। ।1।

अब्रवीच्च हनूमन्तं विक्रान्तमनिलात्मजम्।
सुग्रीव: परमप्रीत: प्रभु: सर्ववनौकसाम्।। 5.44.2

समस्त वानरों के स्वामी सुग्रीव ने अत्यन्त प्रसन्न होकर परम पराक्रमी वायुपुत्र हनुमान से इस प्रकार कहा।2।

न भूमौ नान्तरिक्षे वा नाम्बरे नामरालये।
नाप्सु वा गतिसङ्गं ते पृयामि हरिपुंगव।। 5.44.3

'कपिश्रेष्ठ! पृथ्वी, अन्तरिक्ष, आकाश, देवलोक अथवा जल में भी तुम्हारी गति का अवरोध कभी नहीं देखा गया है।' ।3।

सासुराः सहगन्धर्वाः सनागनरदेवताः।
विदिताः सर्वलोकास्ते ससागरधराधराः।। 5.44.4

'असुर, गन्धर्व, नाग, मनुष्य, देवता, समुद्र, तथा पवर्तों सहित सम्पूर्ण लोकों का तुम्हे ज्ञान है।' ।4।

गतिर्वेगश्च तेजश्च लाघवं च महाकपे।
पितुस्ते सदृशं वीर मारूतस्य महौजसः।। 5.44.5

'महाकपे! सर्वत्र अबाधित गति, वेग, तेज और फुर्ती-ये सभी सद्गुण तुममें अपने पराक्रमी पिता वायु के ही समान हैं।' ।5।

तेजसा वापि ते भूतं न समं भुवि विद्यते।
तद् यथा लभ्यते सीता तत्वमेवानुचिन्तय।। 5.44.6

'इस भूमण्डल में कोई भी प्राणी तुम्हारे जैसा तेजवान नहीं ज्ञात होता है, अतः जिस प्रकार सीता की उपलब्धि हो सके, वह उपाय तुम्ही सोचो।' ।6।

त्वय्येव हनुमन्नस्ति बलं बुद्धिः पराक्रमः।
देशकालानुवृत्तिश्च नयश्च नयपण्डित ।। 5.44.7

'हनुमन! तुम नीतिशास्त्र के पण्डित हो। एकमात्र तुम्ही में बल, बुदि, पराक्रम, देशकाल का अनुसरण तथा नीतिपूर्ण व्यहार एक साथ देखे जाते हैं।' ।7।

ततः कार्यसमासङ्गमवगम्य हनूमति।
विदित्वा हनुमन्तं च चिन्तयामास राघवः।। 5.44.8

सुग्रीव की बात सुनकर राम को यह ज्ञात हुआ कि इस कार्य की सिद्धि का सारा भरोसा हनुमान पर ही किया जा रहा है, उन्होने स्वंय भी हनुमान को इसके लिये समर्थ समझा। फिर वे मन ही मन इस प्रकार विचार करने लगे। ।8।

सर्वथा निश्चितार्थोश्ष्यं हनूमति हरीश्वरः ।
निश्चितार्थतरश्चापि हनूमान् कार्यसाधाने ।। 5.44.9

'वानरराज सुग्रीव सर्वथा हनुमान से ही आशा बांधे हुए हैं तथा हनुमान का भी कार्यसाधन के प्रति आत्मविश्वास दिखाई देता है।' ।9।

तदेवं प्रस्थितस्यास्य परिज्ञातस्य कर्मभिः।
भर्त्र परिगश्हीतस्य ध्रुवः कार्यफलोदयः ।। 5.44.10

'पहले भी कार्यसिद्धियों के द्वारा जिनकी परीक्षा कर ली गई है, वे हनुमान अपने स्वामी सुग्रीव के द्वारा भेजे जा रहे हैं, इनके द्वारा ही इस कार्य की सिद्धि निश्चित मालूम पड़ती है।' ।10।

तं समीक्ष्य महातेजा व्यवसायोत्तरं हरिम्।
कृतार्थ इव संहृष्टः प्रहृष्टेन्द्रियमानसः। 5.44.11.

ऐसा विचारकर कि हनुमान कार्यसाधन के उद्योग मे सर्वश्रेष्ठ है, महातेजस्वी राम कृतार्थ सा मानते हुए प्रसन्न हुए तथा उनकी इन्द्रियां तथा मन हर्ष से खिल उठे। ।11।

ददौ तस्य तत: प्रीत: स्वनामाङ्कोपशोभितम्।
अङ्गुलीयमभिज्ञानं राजपुत्र्या: परंतप:।। 5.44.12

तदन्तर शत्रुनाशक राम ने हर्षपूर्वक अपने नाम के अक्षरों से सुशोभित अंगूठी हनुमान को दी जो कि राजकुमारी (सीता) को देने के लिये थी। । 12 ।

अनेन त्वां हरिश्रेष्ठ चिह्नेन जनकात्मजा।
मत्सकाशादनुप्राप्तमनुद्विग्नानुपश्यति ।। 5.44.13

''इस अंगूठी के द्वारा जनकपुत्री (सीता) तुम्हे पहचान लेंगी कि तुम मेरे पास से ही आये हो तथा बिना किसी भय के तुम्हारी ओर देख सकेंगी।'' । 13 ।

वाल्मीकि रामायण के उपरोक्त मुद्रिका प्रसंग से स्पष्ट है कि राम ही स्वंय हनुमान को मुद्रिका देने का विचार करते हैं, हनुमान द्वारा मुद्रिका की मांग नहीं की जाती। अत: हनुमान के द्वारा मुद्रिका की मांग करने सम्बन्धी सांकलिया का कथन रामायण के कथानक का हिस्सा नहीं है। यह बात सोची जा सकती है कि कदाचित सांकलिया ने उक्त बिन्दु को किसी अन्य रामकथा से ग्रहण कर लिया हो इसलिये प्रमुख रामकथाओं में वर्णित मुद्रिका प्रसंग का विषयगत दृष्टिकोण से अवलोकन कर लेने मे कोई हानि नहीं है।

तुलसीकृत 'रामचरित मानस' के अनुसार सीता की खोज के लिये वानरराज सुग्रीव द्वारा निर्देशित किये जाने के पश्चात् सभी वानर राम को सिर नवां कर जाने को तत्पर होते है। अन्त में हनुमान राम को प्रणाम करते हैं। राम हनुमान को निकट बुलाकर, कमलरूपी हाथ से उनके सिर का स्पर्श कर अपने हाथ की मुद्रिका हनुमान को सौंपते हुए, सीता को बहुत प्रकार से समझाकर शीघ्र लौट आने को कहते हैं।

आयसु मागि चरन सिरू नाई। चले हरषि सुमिरत रघुराई।।
पाछें पवन तनय सिरू नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलावा।।
परसा सीस सरोरूह पानी। कर मुद्रिका दीन्हि जन जानी।।
बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु। कहि बल बिरह बेगि तुम आएहु।।

'आध्यात्म रामायण' में राम हनुमान को प्रस्थान करता हुआ देखकर, अंगूठी देते हुए कहते हैं कि पहचान के लिये मेरे नाम से अंकित अंगूठी एकांत मे सीता को देना-

गच्छन्तं मारूतिं दृष्ट्वा रामो वचनमब्रवीत।
अभिज्ञानार्थमेतन्मे ह्यङ्गुलीयकमुत्तमम्।
मन्नामाक्षरसंयुक्तं सीतायै दीयतां रह:।

कृतिवास द्वारा बंगाली भाषा मे लिखी गई 'कृतिवास रामायण' में यह विचार कि सीता के लिये कोई वस्तु पहचान चिन्ह के रूप मे हनुमान के पास दे दी जाये, सुग्रीव के द्वारा राम को सुझाया जाता है जिससे कि सीता को किसी प्रकार की शंका न होने पावे:

सुग्रीव रामेन प्रति बलिल बचन। जानाइते जानकीरे देह निदर्शन
हनुमान सह तार नाहि परिचय। कि जानि वानर देखि यदि पान भय

श्रीराम बलेन शुन सुग्रीव सुहत। अंगुरी दिलाम आमि सीतार प्रतीत

कम्बन द्वारा तमिल भाषा मे रचित 'रामअवतारम' में भी राम स्वत: ही हनुमान को अंगूठी प्रदान करते हैं। महाभारत के रामोपाख्यान मे मुद्रिका प्रसंग नहीं मिलता है, राम के द्वारा किसी पहचान चिन्ह का दिया जाना नहीं कहा गया है, हां सीता द्वारा, हनुमान के विदा लेते समय उसे एक मणि दिये जाने का उल्लेख है।

गम्यतामिति चोक्त्वा मां सीता प्रादादिमं मणिम।
धारिता येन वैदेही कालमेतमनिन्दिता 3.266.66

वाल्मीकि रामायण ही नहीं अपितु किसी भी प्रमुख रामकथा में हनुमान द्वारा, राम से किसी प्रतीक चिन्ह के मांगे जाने की बात नहीं मिलती। कृतिवास की रामायण में यह विचार सुग्रीव द्वारा राम को सुझाया जाता है। अत: हनुमान के द्वारा मुद्रिका की मांग करने सम्बन्धी सांकलिया का कथन रामायण की कथावस्तु के अनुरूप नहीं है।

B: कथन ब का परीक्षण:

सांकलिया के अनुसार अशोक वनिका में सीता हनुमान से रामदूत होने का कोई प्रमाण देने के लिये कहती है। किन्तु लेखक का यह कथन भी रामायण की कथावस्तु के अनुरूप नहीं है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता हनुमान पर रावण होने की शंका करती है, किन्तु वह हनुमान से राम का दूत होने का कोई प्रमाण सीधे रूप में नहीं मागती है। वह हनुमान से यह कहकर कि उनके मुख से राम की चर्चा सुनना उन्हें अच्छा लग रहा है हनुमान से रामकथा के प्रसंग सुनाने को कहती है। वह बात ही बात मे हनुमान से राम के रूप, आकार, संस्थान, शारीरिक चिन्ह आदि के विषय में भी पूछती है, हनुमान सीता को राम के विषय में ये सारी जानकारियां ठीक-ठीक देने के साथ ही उसे वानर राज सुग्रीव से मित्रता का वृतान्त सुनाते हैं। हनुमान से राम विषयक लम्बी चर्चाओं के बाद सीता को यह विश्वास हो जाता है कि हनुमान वास्तव में राम ही के दूत हैं। तदन्तर हनुमान द्वारा राम की मुद्रिका भी सीता को दी जाती है। वाल्मीकि रामायण में वृक्ष पर से हनुमान का रामकथा सुनाना, फिर उतरकर सीता के सम्मुख पहुँच कर उनसे परिचय पूछना, हनुमान तथा सीता की वार्ता, सीता की शंका तथा आत्मचिन्तन, उसका हनुमान से रामकथा सुनाने का निवेदन आदि, अंगूठी देने से पूर्व लगभग दो सौ श्लोकों के विस्तृत विवरण में कहीं पर भी सीता द्वारा हनुमान से उनकी पहचान स्वरूप कोई चिन्ह प्रस्तुत करने की मांग नहीं की जाती है। वह तो विस्तृत वार्ताओं के द्वारा पहले ही हनुमान की राम दूत के रूप मे परीक्षा कर चुकी होती है।

यदि रामस्य दूतस्त्वमागतो भद्रमस्तु ते।
पृच्छामि त्वां हरिश्रेष्ठ प्रिया रामकथा हि में।। 5.34.18
गुणान् रामस्य कथय प्रियस्य मम वानर।
चित्तं हरसि मे सौम्य नदीकूलं यथा रय:।। 5.34.19
यानि रामस्य चिह्नानि लक्ष्मणस्य च वानर।
तानि भूय: समाचक्ष्व न मां शोक: समाविशेत्।।5.35.3
कीदृशं तस्य संस्थानं रूपं तस्य च कीदृशम्।

कथमूरू कथं बाहू लक्ष्मणस्य च शंस मे ।। 5.35.4
विश्वासार्थं तु वैदेहि भर्तुरूद्रा मया गुणाः।
अचिरात् त्वामितो देवि राघवो नयिता ध्रुवम्।। 5.35.84
एवं विश्वासिता सीता हेतुभिः शोककर्शिता।
उपपन्नैरभिज्ञानैर्दूतं तमधिगच्छति। 5.35.85

यह ध्यान देने की बात है कि सीता के द्वारा वाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड के अन्तर्गत कहीं पर भी हनुमान से अपना प्रमाण प्रस्तुत करने के लिये नहीं कहा जाता, जिस प्रकार से श्री सांकलिया हमें बताते है 'as Hanuman had anticipated Sita asks Hanuman to prove his bona fides'

कहने का तात्पर्य यह है कि सांकलिया द्वारा अपनी पुस्तक में किया गया रामायण के मुद्रिका प्रसंग का संक्षिप्तीकरण वाल्मीकि रामायण की कथावस्तु के आलोक में दोषपूर्ण कहा जायेगा। क्योंकि रामायण में न तो हनुमान राम से कोई चिन्ह मागतें हैं, न उनके ऐसे किसी पूर्वानुमान की बात है जो कहा गया है, और न सीता हनुमान से कोई प्रमाण मांगती है।

2. Sankalia on Ramopakhayana

अपने व्याख्यान के अन्तर्गत सांकलिया ने महाभारत के आरण्यक पर्व मं प्राप्त रामोपाख्यान की भी चर्चा की है। रामायण एवं रामोपाख्यान के अन्तर की चर्चा करते हुए सांकलिया ने निम्नलिखित कथन प्रस्तुत किये है-

' though this akhyana differs in a few details from that occurring in the Ramayana, such as non-mention of Vibhishana' and the mention of Avindhya instead, and the proving of Sita's chastity by Vayu, and not by Agni, still it appears to me that it is indeed a summary of the Ramayana, as already shown by Jacobi, Sukthankar and other scholars.'

(RAMAYANA MYTH OR REALITY ?, P. 19)

उपरोक्त पंक्तियों में सांकलिया द्वारा 'वाल्मीकि रामायण' तथा रामोपाख्यान के बीच तुलनारूप कहे गये उन अभिमतों को जो कि हमारी सम्मति में दोषपूर्ण हैं, हम (a) तथा (b) बिन्दुओं के अन्तर्गत विश्लेषण कर रहे हैं।

(a) Vibhishana And Avindhya:

सांकलिया ने रामोपाख्यान की कथा मे विभीषण का उल्लेख न होना कहा है किन्तु विभीषण का उल्लेख रामोपाख्यान मे प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विद्यमान हैं। उसे मालिनी का पुत्र कहा गया है, साथ ही उसे क्रियाशील, धर्मवत्सल तथा भाइयों में सबसे रूपवान भी कहा है त्रिजटा द्वारा सीता को बताये गये स्वप्न मे। भी विभीषण का उल्लेख है, तदन्तर युद्ध के अवसर पर मेघनाद के द्वारा पीड़ित राम तथा लक्ष्मण को वह प्रज्ञास्त्र से सचेत रहने का रहस्य बताता है। कुबेर की आज्ञा से श्वेतपर्वत से भिजवाये गये दिव्य रसायन से आखों के प्रक्षालन के विषय में भी वह ही राम को बताता है तथा रावण को मारकर राम द्वारा लंका का

राज्य रामोपाख्यान की कथानुसार विभीषण को ही दिया जाता है। युद्धोपरान्त वह लंका पहुचकर सीता को पुरस्कृत(पूजित) करता है तथा उसके राम के साथ पुष्पक विमान में अयोध्या पहुचने का भी उल्लेख है।

मालिनी जनयामास पुत्रमेकं विभीषणम्।
राकायां मिथुनं जज्ञे खरः शूर्पणखा तथा 3.258.8
विभीषणस्तु रूपेण सर्वेभ्योऽभ्यधिकोऽभवत्।
स बभूव महाभागो धर्मगोप्ता क्रियारतिः 3.258.9
श्वेतातपत्रः सोष्णीषः शुक्लमाल्यविभूषणः।
श्वेतपर्वतमारूढ़ एक एव विभीषणः 3.264.66
ततस्तं देशमागम्य कृतकर्मा विभीषणः।
बोधयामास तौ वीरौ प्रज्ञास्त्रेण प्रबोधितौ 3.273.5
तथा समभवच्चापि यदुवाच विभीषणः।
क्षणेनातीन्द्रियाण्येषां चक्षूंष्यासन्युधिष्ठिर।। 3.273.14
ततो हत्वा दशग्रीवं लङ्कां रामो महायशाः।
विभीषणाय प्रददौ प्रभुः परपुरंजयः।। आ0पर्व, 3.275.5.
ततः सीतां पुरस्कृत्य विभीषणपुरस्कृताम्।
अविन्ध्यों नाम सुप्रज्ञो वृद्धामात्यो विनिर्ययौ 3.275.6
गतेषु वानरेन्द्रेषु गोपुच्छर्क्षेषु तेषु च।
सुग्रीवसहितो रामः किष्किन्धां पुनरागमत् 3.275.55
विभीषणेनानुगतः सुग्रीवसहितस्तदा।
पुष्पकेण विमानेन वैदेह्या दर्शयन्वनम् 3.275.56

इसके अतिरिक्त भी रामोपाख्यान में विभीषण का उल्लेख है। आश्चर्य है कि लेखक ने रामोपाख्यान मे विभीषण का उल्लेख न होना कहा है।

सांकलिया ने रामोपाख्यान की चर्चा के अवसर पर विभीषण के स्थान पर अविन्धय का होना कहा कहा है, किन्तु ऐसा हरगिज नही है, रामोपाख्यान मे विभीषण अनुपस्थित नहीं है वहां विभीषण भी है तथा अविन्ध्य भी, दोनों ही राम के पक्षधर हैं किन्तु दोनो की अपनी अपनी भूमिकाएं हैं सिवाय इसके कि रामायण मे युद्धोपरान्त विभीषण, सीता को शिबिका पर बैठवाकर लंका से बाहर लेकर राम के पास पहुंचते हैं तथा रामोपाख्यान में इस अवसर पर अविन्ध्य का महत्व दिखायी देता है। इस अवसर पर रामोपाख्यान में एक ही श्लोक में दोनो का नाम भी देखने को मिलता है:-

ततः सीतां पुरस्कृत्य विभीषणपुरस्कृताम।
अविन्ध्यो नाम सुप्रज्ञो वृद्धामात्यो विनिर्ययौ। म. भा. 3.275.6

अर्थ-तदन्तर विभीषण द्वारा पुरस्कृत सीता को आगे करके अविन्ध्य नामक बुद्धिमान बूढ़ा मंत्री लंका से बाहर निकला।
रामायण-

आरोप्य शिबिकां दीप्तां पराधर्याम्बरसंवृताम्।
रक्षोभिर्बहुभिर्गुप्तामाजहार विभीषण:।। रामायण 6.114.15

विभीषण लंका त्यागकर राम के पक्ष मे युद्ध करते हैं किन्तु अविन्ध्य के राम की ओर से युद्ध करने के संकेत नहीं है। रामोपाख्यान के अविन्ध्य द्वारा अशोक वनिका मे सीता को राम सम्बन्धी सूचनायें दी जाती हैं , किन्तु रामायण में विभीषण के द्वारा ऐसा किये जाने के उल्लेख नहीं है। अस्तु रामोपाख्यान मे अविन्ध्य को विभीषण का स्थानापन्न कहना सरासर गलत है।

(b) Proving of Sita's chastity:

रामोपाख्यान तथा रामायण की तुलना करते हुए सांकलिया ने रामोपाख्यान मे सीता की पवित्रता की परीक्षा, अग्नि के बजाय वायु के द्वारा किये जाने की बात कही है, किन्तु ऐसा नहीं है। सांकलिया का यह कथन भी रामोपाख्यान की कथावस्तु के परिप्रेक्ष्य में सर्वथा दोषपूर्ण है। रामोपाख्यान की कथानुसार सीता की पवित्रता की कोई परीक्षा ली ही नहीं जाती है। रामोपाख्यान मे वायु, अग्नि, वरूण तथा ब्रह्मा आकाशवाणी के माध्यम से सीता के पवित्र होने की घोषणा करते हुए राम से उसे स्वीकारने को कहते हैं, रामोपाख्यान का कथन है कि तब देवताओं को नमस्कार करके मित्रों से अभिनन्दित होकर राम ने सीता को ऐसे ग्रहण किया, जैसे इन्द्र ने शची को ग्रहण किया था:-

ततो देवान्नमस्कृत्य सुहृद्भिरभिनन्दित:।
महेन्द्र इव पौलोम्या भार्यया स समेयिवान्।। 3.275.38

रामोपाख्यान में इस अवसर पर वायु, अग्नि तथा वरूण का कथनरूप एक एक ही श्लोक प्राप्त होता है जिन्हे अनुवाद सहित नीचे दिया जा रहा है, ब्रहा को कथनरूप छ: श्लोको का स्थान दिया गया है, जिन्हे आलेख की सीमा का ध्यान रखते हुए यहां पर देना संभव नहीं है।

वायुरूवाच:

भो भो राघव सत्यं वै वायुरस्मि सदागति:।
अपापा मैथिली राजन्संगच्छ सह भार्यया।। 3.275.26

वायु बोले-हे रघुनन्दन ! मैं सदा चलने वाला वायु हूँ। मैं सत्य कहता हूँ कि तुम सीता को पत्नी रूप में स्वीकार करो, यह निष्पाप है।

अग्निरूवाच:

अहमन्त: शरीरस्थे भूतानां रघुनन्दन।
सुसूक्ष्मपि काकुत्स्थ मैथिली नापराधयति।। 3.275.27

अग्नि बोले-हे रघुनन्दन मैं सब प्राणियों के भीतर रहता हूँ। हे काकुस्थ! जनकनन्दिनी ने कुछ भी अपराध नहीं किया है।

वरूण उवाच :

रसा वै मत्प्रसूता हि भूतदेहेषु राघव।
अहं वै त्वां प्रब्रवीमि मैथिली प्रतिगृह्यताम्।। 3.275.28

वरूण बोले: हे राम! सब प्राणियों के शरीर में रस मेरा ही उत्पन्न किया हुआ है, मैं आपसे कहता हूँ कि आप जानकी को स्वीकार करें।

अस्तु सांकलिया द्वारा रामोपाख्यान में सीता की परीक्षा लिये जाने जैसा अभिमत सर्वथा अनुचित है, यदि उनकी सम्मति में उपरोक्त कथन परीक्षा ही थे तो फिर उन्हे ब्रहा का पहले उल्लेख करना चाहिये था, तथा बाद को समान रूप से वायु, अग्नि तथा वरूण का क्योंकि ब्रहा को ही इस अवसर पर सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है।

3. EXTENT OF LANKA :

अपने पहले व्याखान Is Ramayana a Myth Or Reality? के अन्तर्गत सांकलिया ने रामायण में उल्लिखित नगरों का भी CITIES शीर्षक के अन्तर्गत, उप शीर्षकों के माध्यम से अलग अलग वर्णन तथा विश्लेषण किया है। जिनमें लंका, दण्डकारण्य, किष्किन्धा तथा अयोध्या है।

लंका नामक शीर्षक के अन्तर्गत एक स्थल पर सांकलिया का लंका के विषय मे निम्नोक्त कथन देखने को मिलता है:

'though we are repeatedly told that Lanka was situated on the Trikuta peak or on a hill, still at no time its extent has been given, though we are told that Ravana's palace was half a yojana in extent.' (page, 4)

सांकलिया का विचार है कि रामायण के रचयिता ने रामायण मे किसी भी स्थल पर लंका के विस्तार के विषय में कुछ नहीं बताया है, किन्तु यहां पर भी सांकलिया का विचार उचित नहीं है। रामायणकार ने किश्किन्धाकाण्ड के एकचत्वारिंश: सर्ग: (41) में सुग्रीव के द्वारा दक्षिण दिशा को भेजे जाने वाले वानरवीरों को निर्देश के अवसर पर लंका के विस्तार को भी स्पष्ट रूप से बताया है। यह सूचना सुग्रीव के कथन के रूप में प्राप्त होती है:

द्वीपस्तस्यापरे पारे शतयोजनविस्तृत: ।। 23
अगम्यो मानुषैर्दीप्तस्तं मार्गध्वं समन्तत:।
तत्र सर्वात्मना सीता मार्गितव्या विशेषत: ।। 24

अर्थ:-'समुद्र के उस पार एक द्वीप है, जिसका विस्तार सौ योजन है। वहां मनुष्यों की पंहुच नहीं है। वह जो दीप्तिशाली द्वीप है, उसमें चारों ओर पूरा प्रयत्न करके तुम्हे सीता की खोज करनी चाहिये।'

स हि देशस्तु वधयस्य रावणस्य दुरात्मन:।
राक्षसाधिपतेर्वास: सहस्त्रक्षसमद्युते:। 25

अर्थ:-'वही देश इन्द्र के समान तेजस्वी दुरात्मा राक्षसराज रावण का निवास स्थान है, जो कि हमारा वध्य है।' इस प्रकार लेखक की उपरोक्त शंका का कि रामायण में लंका के विस्तार के विषय में कोई सूचना नहीं दी गयी है, उदाहरणों के माध्यम से निवारण कर लिया गया है।

4. Size Of Setu

सेतु नामक शीर्षक के अन्तर्गत लेखक ने समुद्र मे नल द्वारा बाधें गये सेतु की चर्चा की है, यों तो सेतु के निर्माण को सांकलिया ने अंसभाव्य मानते हुए काल्पनिक माना है, किन्तु विश्लेषण से पूर्व संक्षेप में रामायण के सेतु का कुछ पंक्तियों मे विवरण इस प्रकार दिया है:

'The sea was filled up with all kinds of trees-sala, asvakarva, tala, tilaka, kutaja,arjuna,bilva, saptavarva, karnikara, asoka (6-15-15-20) and than Nala, a son of Visvakarma, built a stone bridge which was 100 yojanas long and 100 yojanas broad.' (Ramayan Myth or reality ? page, 7)

लेखक ने सेतु का आकार सौ योजन लम्बा तथा सौ ही योजन चौड़ा, मानने मे गलती की है। वास्तव में रामायण के अनुसार सेतु सौ योजन लम्बा तो अवश्य है किन्तु उसकी चौड़ाई दस योजन ही है:

दशयोजनविस्तीर्णं शतयोजनमायतम्।
ददृशुर्देवगन्धर्वा नलसेतुं सुदुष्करम् ।। 6.22.76

अर्थ: 'नल के बनाए हुए सौ योजन लम्बे और दस योजन चौड़े, उस सेतु को देवताओं तथा गन्धर्वों ने देखा, जिसे बनाना बहुत ही दुष्कर कार्य था।'

वाल्मीकि से पूर्व, क्या राम कथा किसी भिन्न रूप में अस्तित्व में थी, अथवा वाल्मीकि के समय या उससे पूर्व इसका कोई स्वतंत्र आख्यान विकसित हो चला था, अथवा 'वाल्मीकि रामायण' भी अपने वर्तमान रूप से कोई भिन्न स्वरूप मे विद्यमान रही हो सकती है, अथवा रामायण का विकास किसी घटित घटनाक्रम के आधार पर हुआ होगा, अथवा स्वतंत्र रूप से भिन्न घटनाक्रमों को मिलाकर एक कथावस्तु अस्तित्व मे आई होगी, ये तथा ऐसे अनेक विचार जिज्ञासुओं के मस्तिष्क को हमेशा उद्वेलित करते रहेगें, और इनमें गलत कुछ भी नहीं कहा जा सकता, किन्तु सांकलिया ने अपने पुरातात्विक दृष्टिकोण के आधार पर जिस निश्चितार्थ शैली में निर्णय सुनाये हैं, वह आश्चर्य में डालता है। उन्होंने पुस्तक की प्रस्तावना में मौलिक रामायण के विचार को पुरातात्विक प्रमाणों से पुष्ट कर देने का दावा किया, किन्तु अपनी किसी भी बात के समर्थन में वो एक भी पुरातात्विक सामग्री का उल्लेख नहीं कर सके।

दरअसल, सांकलिया का उदाहरण इस बात का संकेत है कि महाकाव्यों के प्रति हमने कितनी समझ बूझ पैदा की है, गूढ़ विषयो को सामान्य समझ लेने की प्रवृति से हमें बाहर आना होगा। 'प्रकाशित सामग्री' के नाम पर अधिकाधिक द्रव्यमान जुटाने की अन्धी दौड़ में पड़कर हमने महाकाव्यों का ही नहीं समूचे ज्ञान कोष का, अर्थ कम, अनर्थ अधिक किया है।